Study of the effect of self-actualization of students studying at graduation level

Tabrez Qureshi, Researcher, Education Department, Eklavya University, Damoh (M.P.)
Dr. Shobha Upadhyay, Head of Department/Associate Professor, Department of Education
Eklavya University, Damoh (M.P.)

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्बोध के प्रभाव का अध्ययन

तबरेज कुरैशी, शोधात्री, शिक्षा विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)
डॉ. शोभा उपाध्याय, विभागाध्यक्ष/एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

प्रस्तावनाः–

अनुसंधान कई क्षेत्रों में किये जा रहे हैं उनमें शैक्षिक अनुसंधान से मतलब शिक्षा संबंधी समस्याओं पर शोध करना है।

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अंतर्गत बुद्धि व आत्म सम्बोध से संबंधित समस्याओं का स्थान है, ये शिक्षा के उद्देश्य के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं बुद्धि एवं आत्म संबोध का व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है व्यक्तित्व तो वह समग्रता व योग्यता है जिसमें व्यक्ति के संपूर्ण बाह्य एवं आंतरिक गुण व अवगुणों का समावेशित दिग्दर्शन होता है।

आत्म संबोध द्वारा व्यक्ति स्वयं के बारे में क्या जानता है उसके विचार क्या हैं, वह दूसरों के विषय में क्या दृष्टिकोण रखता है, इसके बारे में जानकारी मिल जाती है। व्यक्ति के विचार व्यवहार व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करते है। आत्म संबोध व्यक्ति की कार्य करने की शैली को भी प्रभावित करता है।

शिक्षण एक विज्ञान है इसमें विद्यार्थियों को पढ़ा देना मात्र महत्व नहीं रखता है वरन् उसकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा अर्जित ज्ञान विकसित करना ही महत्वपूर्ण होता है साथ ही उनमें स्वप्नुकूल विषय वस्तु प्रस्तुत करना व उनके ज्ञान का मूल्यांकन करना आवश्यक है। क्योंकि मूल्यांकन छात्र–प्रगति की आधार शिला है। विद्यार्थियों के

व्यक्तित्व विकास में एवं समाज के उत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता। शिक्षा के विकास से ही समाज की दिशा निर्धारित होती है शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के आत्म संबोध संबंधी जिज्ञासाओं को उभारने वाली प्रवृत्तियों को निश्चित दिशा में मोड़ने की क्षमता होती है।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भावना के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि जब तक व्यक्ति अपने आत्म सम्बोध के द्वारा अपने विचार नहीं जानेगे तब तक वह प्रगति नहीं कर सकता। इसी प्रकार अपने आत्म सम्बोध को उच्च स्तर तक विकसित करके ही वह अपने परिवार, समाज, राज्य व राष्ट्र के साथ समायोजन स्थापित कर सकेगा।

समस्या कथनः–

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म संबोध के प्रभाव का अध्ययन।

आत्म संबोध की परिभाषाः–

आत्म संबोध का अर्थ है, स्वयं के बारे में अवधारणा इसके द्वारा यह जानकारी मिलती है। स्वयं के बारे में अवधारणा क्या है? हम क्या? हम कैसे हैं, हम क्यों हैं, जिस प्रकार बालक के विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण का महत्व है उसी प्रकार आत्म संबोध का महत्व है।

फ्रायड के अनुसार– आत्म संबोध एक कोने में लगा हुआ पत्थर है।

काम्बस और सायगस (1959) के अनुसार– आत्म संबोध व्यक्ति की स्वयं और उसकी योग्यता के बारे में जानकारी देता है वह यह भी निर्धारित करता है कि व्यक्ति क्या सोचता है, और कैसा व्यवहार करता है।

गूबर (1967) के अनुसार– वह विषय जो कि प्रश्नपत्रों के कथन एवं आपसी संबंधों एवं सामाजिक क्षमता का उत्तरदायित्व रखता है वह आत्म संबोध कहलाता है।

शोध के उद्देश्यः–

1. विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों के आत्म संबोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विज्ञान समूह की स्नातक छात्राओं एवं कला समूह की स्नातक छात्राओं के आत्म संबोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

1. विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों के आत्म संबोध के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. विज्ञान समूह की स्नातक छात्राओं एवं कला समूह की स्नातक छात्राओं के आत्म संबोध के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

शोध कार्य ग्वालियर जिले में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म संबोध का अध्ययन किया गया है जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राएँ हैं।

उपकरणः– प्रस्तुत अध्ययन में आत्म संबोध मापने के लिए डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधिः– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँः–

परिकल्पनाओं और प्रदत्तों की विश्वसनीयता के किए अध्ययन, मानक विचलन तथा ''टी'' क्रांतिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका–1

विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का आत्म संबोध की तुलना

(N=200)

क्र.	आत्म संबोध के घटक	विज्ञान स्नातक छात्र		कला स्नातक छात्र		क्रांतिक अनुपात (R)	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	शारीरिक	30.14	5.61	29.15	5.60	1.23	NS	NS
2.	सामाजिक	28.11	5.36	29.12	5.12	1.36	NS	NS
3.	स्वाभाव	29.12	4.96	27.22	5.21	2.64	S	S
4.	शैक्षिक	28.17	5.12	29.25	5.28	1.74	NS	NS
5.	नैतिक	29.21	6.10	30.16	6.12	1.10	NS	NS
6.	बौद्धिक	27.15	5.82	28.15	5.04	1.30	NS	NS
	स्मग्र आत्म संबोध	171.90	14.18	173.05	15.20	0.55	NS	NS
	df 198						1.98	2.60

तालिका क्रमांक 1 में विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों के आत्म संबोध को दर्शाया गया है। शारीरिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (30.14) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (29.15) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान स्नातक के छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का शारीरिक का स्तर समान है। सामाजिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (28.11) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (29.12) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सामाजिक स्तर पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का सामाजिकता का स्तर समान है। स्वभाव पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (29.12) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (27.22) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का स्वभाव का स्तर कला समूह के स्नातक छात्रों का स्तर उच्च है। शैक्षिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (28.17) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (29.25) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का शैक्षिक का स्तर समान है। नैतिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (29.21) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (30.16) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का नैतिक का स्तर समान है। बौद्धिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (27.15) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (28.15) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का बौद्धिक का स्तर समान है। समग्र आत्म सम्बोध पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (171.90) एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का मध्यमान (173.05) है। 0.05 एवं 0. 01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्रों एवं कला समूह के स्नातक छात्रों का समग्र आत्म सम्बोध का स्तर समान है।

अतः शून्य परिकल्पना मान्य की जाती है।

तालिका–2

विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का आत्म सम्बोध की तुलना

(N=200)

क्र.	आत्म सम्बोध के घटक	विज्ञान स्नातक छात्राएँ		कला स्नातक छात्राएँ		क्रांतिक अनुपात (R)	व्याख्या	
		M	SD	M	SD		0.05	0.01
1.	शारीरिक	32.24	6.12	30.25	6.18	2.29	S	NS
2.	सामाजिक	30.18	5.90	29.18	5.75	1.21	NS	NS
3.	स्वाभाव	29.15	6.15	23.23	5.95	1.25	NS	NS
4.	शैक्षिक	30.21	5.82	29.15	5.71	1.30	NS	NS
5.	नैतिक	29.28	5.87	30.21	6.10	1.09	NS	NS
6.	बौद्धिक	26.12	5.12	28.14	5.65	2.65	S	S
	स्मग्र आत्म संबोध	177.18	15.10	175.26	14.12	0.93	NS	NS
	df 198						1.96	2.60

तालिका क्रमांक 2 में विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं के आत्म सम्बोध को दर्शाया गया है। शारीरिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (32.14) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (30.25) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः विज्ञान स्नातक के छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का शारीरिक का स्तर समान है। सामाजिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (30.18) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (29.18) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सामाजिक स्तर पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का सामाजिकता का स्तर समान है। स्वभाव पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (29.15) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (28. 23) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का स्वभाव का स्तर समान है।

शैक्षिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (30.21) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (29.15) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है।

अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का शैक्षिक का स्तर समान है। नैतिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (29.28) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (30.21) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का नैतिक का स्तर समान है।

बौद्धिक पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (26.12) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (28.14) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं की अपेक्षा कला समूह के स्नातक छात्राओं का बौद्धिक स्तर उच्च है। समग्र आत्म सम्बोध पर विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (177.18) एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का मध्यमान (175.26) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर ''टी'' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः विज्ञान समूह के स्नातक छात्राओं एवं कला समूह के स्नातक छात्राओं का समग्र आत्म सम्बोध का स्तर समान है।

अतः शून्य परिकल्पना मान्य की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. **गैरेट, एच.ई. (1981)–** मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यकीय दशम संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बाम्बे।
2. **मंगल, एस.के. (2010)–** शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. **सुरेश, भटनागर (2010)–** शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. **गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2007)–** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. **कपिल, एच.के. (1990)–** रिसर्च मेथड इन विहेवियरल साइंस, हरप्रसाद भार्गव, आगरा।
6. **वर्मा, प्रीति (1994)–** मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यकीयः विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. **सारस्वत, आर.के. (2005)–** मेनुएल फार सेल्फ कान्सेप्ट क्वचनायर, नेशनल साईकॉलाजी कार्पोरेशन, भार्गव भवन, आगरा।